1907
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
69
१३६
CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकालय
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
विषय संख्या 69 आगत नं० 35,029
लेखक 926
शीर्षक

दिनांक	सदस्य संख्या	दिनांक	सदस्य संख्या

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिनांक	सदस्य संख्या	दिनांक	सदस्य संख्या

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री भवानीप्रसाद जी
हल्दौर (बिजनौर) निवासी द्वारा पुस्तकालय गुरुकुल
कांगड़ी विश्वविद्यालय को सवादोहजार पुस्तकें सप्रेम भेंट।

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार
पुस्तकालय

...या ६१
१३६
...या ३५,०२१
...कार की निशानियां
...५ दिन से अधिक
...खें।

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
कृपया पुस्तक के ऊपर कोई निशान आदि
न लगाएं।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

६९
१२६
३५,०२२

पुस्तकालय
गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

वर्ग संख्या ६९/१२६ आगत संख्या ३५,०२१

पुस्तक विवरण की तिथि नीचे अंकित है। इस तिथि सहित 30 वें दिन यह पुस्तक पुस्तकालय में वापस आ जानी चाहिए अन्यथा 50 पैसे प्रति दिन के हिसाब से विलम्ब दण्ड लगेगा।

35021

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कवि आनन्दघन कृत

विरहलीला।

(गोपियों का विरहविलाप)

"कहां हो जू कहां हो जू कहां हो !
लगे ये प्रान तुम सों हैं जहां हो"

गुरुकुल ग्रन्थालय कांगडी.
CHECKED 197
Initial

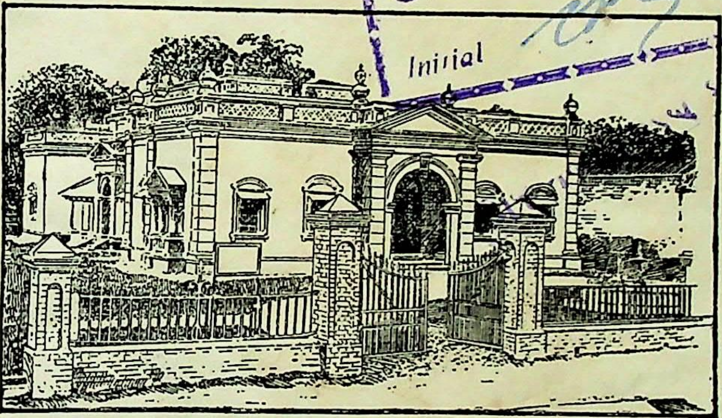

मिर्जापुर-निवासी-आक्सफर्डस्थ काशीप्रसाद
ज़ायसवाल द्वारा सम्पादित
और
काशी नागरीप्रचारिणी सभा द्वारा
प्रकाशित।

पुस्तकालय गुरुकुल कांगड़ी

1907

Printed at the BHARAT PRESS BENARES.

71,136
35021
CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऋते ज्ञानान्न मुक्तिः
पुस्तक सं.
आगत सं.
तिथि
गुरुकुल ग्रन्थालय काँगड़ी

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी प्रेमियों

को

उनके प्रवासी भाई की भेजी हुई

यह भेंट स्वीकृत हो।

STOCK VERIFY
2019-20
GKV Library

आक्सफर्ड
१९०७ ई०

का० प्र० जा०

71,136
35021

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूमिका ।

श्रीघनानन्द जी का नाम हिन्दी साहित्य में सुपरिचित है। इनकी कविता में अनोखी माधुरी और अकृत्रिमता है। स्वर्गीय बाबू हरिश्चन्द्र जी के प्यारे कवियों में आनन्दघन जी थे। इनकी कविता के अनुकरण बाबू साहब कभी कभी लिखते थे। हरिश्चन्द्र युग में इनकी कविता की बहुत चर्चा हुई। 'सुन्दरीतिलक' में इनकी कविता से कई अच्छी सवैयाएं ली गईं। लेकिन ग्रन्थरूप में आनन्दघन जी की कोई कृति प्रकाशित न हुई। १० वर्ष के लगभग हुआ कि भगवद्भक्ति विषयक अनेक काव्यों के छापने वाले बाबू अमीर सिंह ने अपने हरिप्रकाश प्रेस में बाबू जगन्नाथ दास (रत्नाकर) बी० ए० की सहायता से, इनकी कविता के ४८३ पदों का संग्रह 'सुजानसागर' नाम देकर प्रकाशित किया था। इसमें सवैया, दंडक, दोहे और सोरठे हैं।

किन्तु इस विरह लीला की कोई समूची कृति प्रकाशित नहीं हुई। हिन्दी हस्तलिखित पुस्तकों की खोज की रिपोर्टों में दो स्थान पर इनके काव्यों का उल्लेख है। एक सन् १९०० की रिपोर्ट में ७९ वें नम्बर की नोटिस है जो मथुरा में एक जगह **घनानन्द कवित्त** नामक ग्रन्थ, ५१६ पदों का बतलाती है; और दूसरी सन् १९०३ की रिपोर्ट में (नं० ६६) महाराज बनारस के यहां ४४८ पदों का **कृपाकन्द निबन्ध** नामक पुस्तक का हवाला है। मथुरा वाला ग्रन्थ संग्रह है, इसके

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आदि में वे ही सवैयाएं हैं जो हरिप्रकाश के सुजानसागर के आरम्भ में हैं और जैसे सुजानसागर के अन्त में समाप्ति सूचक कोई पद्य नहीं है उसी तरह मथुरा की पुस्तक में भी नहीं है । काशिराज के यहां का भी ग्रन्थ संग्रह सा ही मालूम होता है किन्तु ठीक नहीं कहा जा सकता ।

बाबू श्यामसुन्दर दास बी० ए० ने हिन्दी पोथियों की खोज की सन् १९०० की रिपोर्ट में लिखा है कि सुना जाता है कि आनन्दघन जी ने १५०० पद्यों का रसकेलिवल्लि नामक ग्रन्थ लिखा था ।

बाबू शिवसिंह सेंगर अपने ग्रन्थ सरोज में लिखते हैं कि फुटकर कोई ५०० कवित्त आनन्दघन के उनको मिले पर कोई उनका ग्रन्थ उन्हें भी देखने में नहीं आया* ।

जब मैं स्वदेश में था, तो मैंने ब्रिटिश म्यूजियम में हिन्दी हस्तलिखित ग्रन्थों की सूची देखी थी। उसमें आनन्दघन की **विरहलीला** नामक रचना की नोटिस पढ़ी थी । इस काव्य का जो नमूना उसमें दिया हुआ था उसका अनोखापन, माधुर्य देखकर तथा उसमें और भारतेन्दु जी की 'दशरथ विलाप' कविता में साम्य देखकर मेरा मन पूरा काव्य पढ़ने को ललचा, पर यह कहीं मिल न सका । फिर गए साल में जब इस देश में आना हुआ, तो डा० ग्रियर्सन और सर राबार्ट डगलस (जो चीनी भाषा के लंदन युनिवर्सिटी में अध्यापक और ब्रिटिश म्यूजियम के पूर्वी भाग के लाइब्रेरियन हैं) की सहायता से पूरी कविता की प्रतिलिपि मिल गई जो आप लोगों की भेंट की जाती है ।

---

* शिवसिंह सरोज नं० २२

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसमें आनन्दघन जी ने विदेशी छन्द में परम सरसता और अकृत्रिमता से बोलचाल की भाषा में गोपियों का विलाप सुनाय है। आशा है काव्यप्रेमियों का इससे अवश्य मनोरंजन होगा।

जो प्रति ब्रिटिश म्यूजियम में है वह अठारहवीं शताब्दी के लेखक—पुस्तक—लेखोपजीवी—के सुन्दर अक्षरों में लिखी है। ब्रज की लिखी मालूम होती है। एक गुटके में बँधी है जिसमें अग्रदास की ध्यानमञ्जरी (रोला छन्द में), नन्ददास का रुक्मिणीमङ्गल (रोला) नन्ददास की विरह मञ्जरी, वीरभद्र कवि की बालचरितलीला, ध्रुवदास का भजनशत (पद), उन्हीं की मनशिक्षा, नन्ददास की रासपञ्चाध्यायी और भगवानदास निरंजनी का प्रेमपदार्थ नामक चुनी हुई कविताएं हैं। अगर समय मिला तो इस गुटके में से और भी कुछ प्रकाशित किया जायगा।

आनन्दघन जी का जीवन चरित अभी तक हिन्दी में नहीं छपा। सुजानसागर की भूमिका में रत्नाकर जी ने सूचना दी थी कि वे जीवनचरित की सामग्री ढूंढ़ रहे हैं। नहीं मालूम, कहां तक वे कृतकार्य हुए।

बाबू शिवसिंह सेंगर ने इनके विषय में बहुत थोड़ा लिखा है। वे लिखते हैं कि इनकी कविता सूर्य के समान भासमान हैं, हमने कोई ग्रन्थ इनका नहीं देखा, फुटकर इनकी कविता प्रायः पांच सौ तक हमारे कुतुबखाने में होगी। बाबू शिवसिंह के लिखने के अनुसार सम्वत् १७१५ में ये वर्तमान थे और दिल्ली के थे। डाक्टर ग्रियर्सन ने महादेव प्रसाद कृत साहित्यभूषण के प्रमाण पर लिखा है कि ये

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कायस्थ थे, दिल्ली के बादशाह मुहम्मदशाह [ई० १७१९-१७४८] के मुंशी थे, वृन्दाबन में आ रहे थे और नादिरशाह ने जब मथुरा पर चढ़ाई की, लड़ाई में मारे गए। डा० साहब को इसके सिवा और कुछ अब तक मालूम नहीं हो सका। डा० साहब ने अपनी Modern Vernacular Literature of Hindustan में जिससे यह अवतरण लिया गया है अनुमान किया है कि आनन्द कवि और आनन्दघन शायद एकही हैं। लेकिन यह ठीक नहीं है क्योंकि हस्तलिखित पुस्तकों की खोज में जो कृति आनन्द की मिली है उसकी भाषा और आनन्दघन की भाषा में कुछ मेल नहीं और न तो आनन्दघन कभी अपने को केवल आनन्द कहते थे। दूसरों ने घनान्द उन्हें कहा है पर आनन्द नहीं। आनन्द की कृति की एक प्रति जोधपुर में १७९१ की लिखी मिली है। [रिपोर्ट १९०२, नं० ५]। मालूम होता है कि आनन्द आनन्दघन जी के पहिले हुए।

आनन्दघन जी की कुछ कविता कृष्णानन्द व्यासदेव ने जो कलकत्ते से व्रज में आ बसे थे अपने रागकल्पोद्भव रागकल्पद्रुम, में छापा था। यह ग्रन्थ १००) को बिका था (शिवसिंह सरोज)।

आनन्दघन के दण्डक और उनकी सवैयाएं व्रज भाषा में प्रायः विरह पर ही हैं। विरह लीला में दिल्ली और व्रज की बोलियों का मेल है।

इनकी कविता के परिचय में सवैयाएं प्रसिद्ध हैं।

नेही महा, व्रजभाषा प्रवीन, औ सुन्दरतानि के भेद कों जानै।
आगे विजोग की रीति मैं कोविद भावना भेद स्वरूप कौं टानै॥
चाह के रंग मैं भींज्यो हियो बिछुरें मिलें प्रीतम सांति न मानै।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाषाप्रवीन, सुछन्द सदा रहै, सो घनजू के कवित्त बखानै ॥
प्रेम सदा अति ऊंची लहै सुकहै इहि भांति की बात छकी।
सुनिकै सब के मन लालच दौरै पै बौरै लखैं सब बुद्धि चकी॥
जग की कविताई के धोखें रहैं ह्यां प्रवीनन की मति जाति जकी।
समुझै कविता घन आनँद की हिय आंखिन नेह की पीर तकी॥

आनन्दघन यह नाम काव्य-नाम उपनाम जान पड़ता है। असल नाम अभी तक मालूम नहीं हुआ। यह उपनाम भी हिन्दी में अनोखा है। इनके जोड़ का केवल एक ही नाम और है—प्रेमघन—जो हमारे नगर के कवि श्रीयुत पण्डित बदरीनारायण जी का उपनाम है।

अन्त में मैं डाक्टर ग्रियर्सन और सर राबर्ट डगलस को उनकी कृपा और सहायता के लिये बहुत धन्यवाद देता हूं।

युनियन,
आक्सफर्ड
फरवरी १९०७ } काशीप्रसाद जायसवाल।

पुस्तकालय गुरुकुल कांगड़ी

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

605 ८ १/२६

बिरहलीला ।

सलोने श्याम प्यारे क्यों न आवो ।
दरस प्यासी मरैं तिनको जिवावो ॥ १ ॥
कहां हो जू कहां हो जू कहां हो ।
लगे ये प्रान तुम सों हैं जहां हो ॥ २ ॥
रहो किन प्रान प्यारे नैन आगे ।
तिहारे कारने दिन रात जागें ॥ ३ ॥
सजन हित मान कै ऐसी न कीजै ।
भई हैं बावरी सुध आप लीजै ॥ ४ ॥
कहीं तब प्यार सों सुख दैन बातें ।
करौ अब दूर तें दुख दैन घातें ॥ ५ ॥
बुरे हौ जू बुरे हौ जू बुरे हौ ।
अकेली कै हमैं ऐसे दुरे हौ ॥ ६ ॥
सुहाई है तुम्हैं यह बात कैसैं ।
सुखी हौ स्यांवरे हम दीन ऐसैं ॥ ७ ॥
दिखाई दीजिए हा हा अमोही ।
सनेही ह्वै रुखाई क्यों बसोही ॥ ८ ॥
तुम्हैं बिन स्यांवरे ये नैन सूने ।
हिये में लै दिए बिरहा अजूने ॥ ९ ॥
उजारो जो हमे काको बसैहो ।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमें औराय के औरन हँसैहौ ॥ १० ॥
कहैं अब कौन सों बिरहा कहानी ।
न जानी ही न जानी ही न जानी ॥ ११ ॥
लिखैं कैसे पियारे प्रेम पाती ।
लगे अंसुवन झरी बैटूक छाती ॥ १२ ॥
पर्यो है आन कै ऐसो अँदेसो ।
जरावे जीव अरु कानन सँदेसो ॥ १३ ॥
दसा है अटपटी पिय आय देखो ।
न देखो तो परेखो हौ परेखो ॥ १४ ॥
अजू ऐसे कहो कैसे बितइये ।
अवध बिन हूं सदा पैंड़ो चितइये ॥ १५ ॥
अनोखी पीर प्यारे कौन पावे ।
पुकारो मौंन में कहि वें न आवे ॥ १६ ॥
अचंभे की अगिन अन्तर जरो हों ।
परोसी री मरो नाही मरो हों ॥ १७ ॥
कहा जानो तुम्हारे जी कहा है ।
असोची मोही तोसी सो महा है ॥ १८ ॥
तिहारे मिलन की आसा न छूटे ।
लग्यौ मन बावरो तोरे न टूटे ॥ १९ ॥
अजों धुन बांसरी की कान बोलै ।
छबीली छैल डोलन सँग डोलै ॥ २० ॥
सलौनी स्याम मूरत फिरै आगे ।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कटाछैं बान सी उर आन लागें ॥ २१ ॥
मुकट की लटक हिय में आय हालै ।
चितौनी बंक जिय में आय सालै ॥ २२ ॥
हसन में दसन दुति की होत कौधैं ।
वियोगी नैन चेटक चाय चौधैं ॥ २३ ॥
अधर को देख प्यासी नैन दौरैं ।
अमके प्रान बिनु ह्वै विवस बौरैं ॥ २४ ॥
अचानिक आय मदन जब सतावै ।
कहौ तब की दसा कहि को बतावै ॥२५॥
लगे लालन बिरह की तब चटपटी ।
सहै कैसे कहौ इह गत अटपटी ॥ २६ ॥
बहै तब नैन ते अँसुवान धारा ।
चलावै सीस पै बिरहा जु आरा ॥ २७ ॥
इतै पै जौ न पाऊं पीर प्यारे ।
रहै क्यों प्रान ये बिरही बिचारे ॥ २८ ॥
सुहाई है तुम्हैं कैसे अनैसी ।
कहैं कासों करो तुमही जु ऐसी ॥ २९ ॥
जरावै नीर तौ फिर को सिरावै ।
अमी मारै कहौ जू को जिवावै ॥ ३० ॥
जौ चन्दा ते झरे दैया अँगारे ।
चकोरन की कहो गति कौन प्यारे ॥ ३१ ॥
अजू ब्रजनाथ गोपीनाथ कैसे ।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करे बिरहा हमारे हाल ऐसे ॥ ३२ ॥
अचम्भो है अचम्भो है यहां जू ।
सनेही हो कहो कीनो कहा जू ॥ ३३ ॥
हियो ऐसो कठिन कब ते कियो है ।
बली अबलीन मारैं सुन लियो है ॥ ३४ ॥
करो अवसो तुम्है आछी लगे हो ।
जसोदानन्द जैसे जस जगे हो ॥ ३५ ॥
तिहारे नाम के गुण बांध डारी ।
विचारो जू बिचारी है विचारी ॥ ३६ ॥
दया दिखराय विनती कीजिए जू ।
परे पायन हिये धरि लीजिए जू ॥ ३७ ॥
भरोसो है भरोसो है भरोसो ।
रही ब्रत धर अजू अब तो परोसो ॥ ३८ ॥
रंगीले हौ छबीले हौ रसीले ।
न जू अपनीन सौं हुजै गसीले ॥ ३९ ॥
लगौ नीकें सबै विधि प्रान संगी ।
तिहारी मोन है प्यारे तरंगी ॥ ४० ॥
तुम्है बिनु क्यों जिये तुम ही विचारो ।
बचैं कैसे कहो तुम ही जु मारो ॥ ४१ ॥
रहो नीके अजू घनश्याम प्यारे ।
हमारे हौ हमारे हौ हमारे ॥ ४२ ।
तिहारी है तिहारी है तिहारी ।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विचारी है विचारी है विचारी ॥ ४३ ॥
तिहारे नाम पर हम प्रान वारें ।
जहां हौ जू तहां रहिये सुखारे ॥ ४४ ॥
तुम्हें निस द्यौस मनभावन असीसैं ।
सजीवन हौ करो हम पै कसीसैं ॥ ४५ ॥
लगी जिन लाडले जू पौन ताती ।
सुहाई है हमैं तुम कों सुहाती ॥ ४६ ॥
कहौ तुमही जू प्यारे दीन दोषैं ।
दया की वृष्टि सों फिर कौन पोषैं ॥ ४७ ॥
सुरत कीजै विसारे क्यों बनेगी ।
विरहिनी यों अवध कब तक गिनेगी ॥४८॥
हियो ऐसो कठिन कब तक कियो है ।
मिलौ औरन हमैं विरहा दियो है ॥ ४९ ॥
नहीं पाई परै प्यारी लपेटैं ।
कहो हा हा कहा धौं आह पैटैं ॥ ५० ॥
भई सूधी सुनो बांके बिहारी ।
न करहैं मान फिर सौंहै तुमारी ॥ ५१ ॥
चढ़ाई मूड़ अब पायन परैंगी ।
कहो जोई अजू सोई करैंगी ॥ ५२ ॥
दई कौं मान कै अब आन ज्यावो ।
प्यासी हैं पियारे सुरस पियावो ॥ ५३ ॥
तिहारी हैं कछू क्यों हूं जियेंगी ।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिरह घायल हियो ज्यों त्यों सियेंगी ॥५४॥
बिसासिन बाँसुरी फिरिहूं सुनेंगी ।
कियो ही सीस ऐसे रन धुनेंगी ॥ ५५ ॥
न तोरी जू कहो क्यों हूं बजोरी ।
निगोड़ी प्रीत की दुख दैन डोरी ॥ ५६ ॥
करी तुम तो अजू नष खान हाँसी ।
परी गाढ़ें गरे बिसवास फांसी ॥ ५७ ॥
न छूटे जू न छूटे जू न छूटे ।
टगोरी रावरी बिरहा बलूटे ॥ ५८ ॥
हमारी एक तुम सों टेक प्यारे ।
मिलन मैं कै कपट ह्वै गये न्यारे ॥ ५९ ॥
चकोरी बापुरी ये दीन गोपी ।
अहो ब्रजचन्द क्यों पहिचान लोपी ॥६०॥
छबीले छैल तुम को पीर काकी ।
बिथा की कथा तें छतिया जो पाकी ॥६१॥
सजीवन स्यांवरे कब धौं ठरोगे ।
मरे साधा बिरह बाधा हरोगे ॥ ६२ ॥
टरे नाहीं हिये ते हेत याती ।
सम्हारो आय के प्यारे सँघाती ॥ ६३ ॥
बढ़े आसा हिये भेदौं न दीसी ।
न दासे को मसोसैं भावरीसी ॥ ६४ ॥
तिहारी हैं दुखारी बूझिये क्यों ।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
६७/३५८ ३५,०२१

सुनौ सुखदैन प्यारे दीन हैं ज्यों ॥ ६५ ॥
दई मारीन की अब दया आने ।
परे पाहुरी ते ब्रजनाथ माने ॥ ६६ ॥
अजू अब संग लागे प्रान प्यारे ।
सुने जिन कान मोहन गुन तिहारे ॥ ६७ ॥
तिन्है घटि बात कैसे सह परी है ।
बिना ही का जियरा जूझ मरी है ॥ ६८ ॥
हमैं तुम्ह तो लागे सब भांत नीके ।
करो फिर पातरो ये साल ही के ॥ ६९ ॥
कहा वारे निछावर ह्वै रही हैं ।
कहै कब लौं कही हैं जू कही हैं ॥ ७० ॥
रसिक सिरमौर हो रस राख लीजै ।
तनिक मन मान के गुन बीच दीजै ॥ ७१ ॥
धरे ये नाम को अब नाम ऐसे ।
सुहाई है सुहाई परे कैसे ॥ ७२ ॥
सदन रावरी बिन मोल केरी ।
घरन तें काढ़ि बन बासीन घेरी ॥ ७३ ॥
किये की लाज है ब्रज नाथ प्यारे ।
विराजौ सीस पै जग मैं उज्यारे ॥ ७४ ॥
सदा सुख है हमै तुम साथ आछै ।
लगी डोलैं छबीली छाँह पाछैं ॥ ७५ ॥
तुम्हैं देखें तुम्हैं भेटें भलेही ।

LIBRARY
CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

६९
१३६
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार

पुस्तक लौटाने की तिथि अन्त में अङ्कित है। इस तिथि को पुस्तक न लौटाने पर छै नये पैसे प्रति पुस्तक अतिरिक्त दिनों का अर्थदण्ड लगेगा।

१००००.६.५६। ३५,०२१

Entered in Database
Signature with Date

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(विज्ञान विभाग)
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

पुस्तक-वितरण की तिथि नीचे अंकित है। इस तिथि सहित १५वें दिन तक यह पुस्तक पुस्तकालय में वापिस आ जानी चाहिए। अन्यथा ५ पैसे प्रतिदिन के हिसाब से विलम्ब-दण्ड लगेगा।

स्टाक प्रमाणीकरण

पुस्तकालय, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar